

थारू जनजातीय लोक संस्कृति एवं लोक जीवन (बलरामपुर एवं सिद्धार्थनगर जनपद के विशेष संदर्भ में)

वन्दना गुप्ता

सहायक आचार्य

प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर

सारांश

जनजाति' की आदर्श परिभाषाएँ कुछ बनी-बनाई धारणाओं तक सीमित हैं, जैसे कि जनजातीय समाज संस्कृति से बंधा हुआ, गैर-स्तरीकृत, जातिविहीन, वर्गविहीन, क्षेत्रीय रूप से सीमित, अलग-थलग और सजातीय समाज होता है। लेकिन सामाजिक परिवर्तन के इस आधुनिक युग में जहाँ लोग उन्नति के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, आदर्श प्रकार की 'जनजातियाँ' शायद ही मिल पाती हैं। वर्तमान समय में जनजातियाँ अब स्वतंत्र और अलग-थलग सामाजिक समूह नहीं हैं। इस संबंध में आमतौर पर सामने आने वाली समस्या सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन है। उत्तर प्रदेश की थारू जनजातियाँ भी इसका अपवाद नहीं हैं; वे देश के सबसे अधिक प्रभावित स्वदेशी समूहों में से एक हैं जो सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का सामना कर रहे हैं और अपनी पहचान के मुद्दों से जूझ रहे हैं। यह शोध पत्र भारत में उत्तर प्रदेश की थारू जनजातियों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं और पैटर्न का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है, जैसा कि इस संदर्भ में उपलब्ध कई अध्ययनों से स्पष्ट है। प्रस्तुत शोध -पत्र सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त शोध बीज प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत प्राप्त शोध परियोजना से सम्बंधित है।

बीज शब्द: थारू जनजातियाँ, परिवर्तन, विकास, आधुनिकीकरण, संस्कृतीकरण, हिंदूकरण।

प्रस्तावना

संस्कृति संचयी होती है- संस्कृति में शामिल विभिन्न ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित किया जा सकता है। मानव जीवन केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है। इसके साथ ही मानव जीवन में संस्कृति और लोकजीवन का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृति, सभ्यता और लोकजीवन एक दूसरे से अत्यंत गहराई से जुड़े हुए हैं। संस्कृति, मानव सभ्यता की आत्मा है, और लोकजीवन, संस्कृति की अभिव्यक्ति है। वस्तुतः भारत-नेपाल और भूटान में हिमालय की तलहटी में स्थित क्षेत्रों को तराई क्षेत्र के रूप इस संदर्भ में मानते हैं। भारत-नेपाल सीमावर्ती तराई क्षेत्र का इतिहास काफी समृद्ध है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही विभिन्न राजवंशों और साम्राज्यों का हिस्सा रहा है। मुख्यतः कृषि निर्भरता वाला यह परिक्षेत्र वैविध्यपूर्ण एवं मिश्रित सामाजिक-सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं के साथ प्राचीन काल से ही आगे बढ़ रहा है। थारू जनजाति उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी आदिवासी

समुदाय है, 2011 की जनगणना के अनुसार इसके लगभग 83,544 सदस्य हैं, जो राज्य की कुल आदिवासी आबादी का 77.4% हैं। जंगल के अंदरूनी इलाकों में रहने के कारण वे ऐतिहासिक रूप से बाहरी प्रभावों से बचे रहे हैं, जिससे वे एक बहुत ही अलग संस्कृति को बनाए रख पाए हैं।

परिचयात्मक पृष्ठभूमि

भारत कई जातियों का देश है और थारू जनजाति उनमें से एक है। वे इस इलाके की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी आदिवासी कम्युनिटी में से एक हैं। वे आम तौर पर खेती करने वाले और फेरी लगाने वाले होते हैं। वे अपनी थारू भाषा बोलते हैं जिसे “थरुहाटी” के नाम से जाना जाता है और स्क्रिप्ट देवनागरी है और बातचीत के लिए वे हिंदी भी बोलते हैं। थारू लोग जो सदियों से मलेरिया से इन्फेक्टेड होकर तराई के घने जंगलों में रहते थे, उनमें मलेरिया के खिलाफ पैदाइशी रेजिस्टेंस डेवलप हो गया। थारू लोगों को उत्तर प्रदेश में चार दूसरी जनजातियों (बुक्सा, भोटिया, जौनसारी और राजी) के साथ संविधान (शेड्यूल ट्राइब्स) (उत्तर प्रदेश) ऑर्डर, 1967 के ज़रिए शेड्यूलड ट्राइब्स का दर्जा मिला। आबादी के हिसाब से, थारू उत्तर प्रदेश के सभी मौजूदा पांच आदिवासी ग्रुप में सबसे ज्यादा आबादी वाला ग्रुप है। थारू समुदाय की ज्यादातर आबादी भारत-नेपाल बॉर्डर पर भाभर तराई इलाके में रहती है (श्रीवास्तव, 1958)। थारू अधिकांश उत्तराखंड के उधम सिंह नगर ज़िले, उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी, बहराइच, बस्ती, गोंडा, बलरामपुर और गोरखपुर ज़िलों और बिहार के चंपारण ज़िले में रहते हैं। उत्तराखंड में थारू जनजाति की कुल आबादी 91,342 और उत्तर प्रदेश में 1,05,291 है। थारू लोग अलग-अलग देवी-देवताओं को अपने लोकल देवताओं के तौर पर पूजते हैं। वे ज्यादातर हिंदू धर्म को मानते हैं, लेकिन इस्लामिक, एनिमिस्ट और बौद्ध धर्म को भी मानते हैं। नेपाल में थारू अपने लोकल देवता को ‘गोर-राजा’ कहते हैं। खेती थारू समाज की रीढ़ है। ये कुशल किसान जौ, गेहूं और चावल सहित कई तरह की फसलें उगाते हैं, और अपनी खेती की तकनीकों को मुश्किल तराई के माहौल के हिसाब से ढालते हैं। खेती के अलावा, वे पशुपालन में भी माहिर हैं, मुर्गियां, बत्तख और बकरियां पालते हैं जो उन्हें खाना और कमाई दोनों देते हैं। थारू भाषा, जो संस्कृत से निकली है, इंडो-आर्यन भाषा परिवार से संबंधित है। प्राचीन परंपराओं से यह भाषाई जुड़ाव वास्तुकला में उनके व्यावहारिक आविष्कारों के साथ मौजूद है। थारू घर अपनी सुंदर सजावट के लिए जाने जाते हैं, जिनमें जालीदार दीवारें और चावल रखने के लिए खास बर्तन होते हैं जो सौंदर्य बोध और कार्यात्मक डिजाइन दोनों को दिखाते हैं। ये संरचनाएं, जो मुख्य रूप से बांस और मिट्टी से बनी हैं, स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके टिकाऊ निर्माण की गहरी समझ दिखाती हैं।

लोक संस्कृति एवं जीवन

थारू धार्मिक प्रथाएं हिंदू धर्म और स्वदेशी मान्यताओं का एक दिलचस्प मिश्रण हैं। वे भगवान शिव को महादेव के रूप में पूजते हैं और नारायण को सर्वोच्च देवता मानते हैं जो धूप, बारिश और फसलें देते हैं। गुरुबा, या शमन, समुदाय के स्वास्थ्य और आध्यात्मिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन पारंपरिक वैद्यों को औषधीय पौधों का ज्ञान होता है और वे ऐसे अनुष्ठान करते हैं जो भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच सामंजस्य बनाए

रखते हैं। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अधिक सुलभ होने के बावजूद, कई थारू समुदाय अपनी पारंपरिक उपचार प्रणालियों को महत्व देते हैं।

थारू समुदाय के लोग अपने पारंपरिक स्थानीय देवी- देवता को खुश करने के लिए जानवरों की बलि देने में भी विश्वास रखते हैं। इस समुदाय का मुख्य काम मछली पकड़ना, शिकार करना और खेती करना है। थारू लोग नेशनल लेवल की पॉलिटिक्स में हिस्सा नहीं लेते, लेकिन वे लोकल पॉलिटिक्स में 'प्रधान' और 'गुरुवा' (पारंपरिक पंचायत के हेड) के तौर पर एक्टिव हैं। हालांकि वे हिंदू जाति समाज की पितृसत्तात्मक सोच को मानते हैं, लेकिन थारू कम्युनिटी में महिलाओं की स्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर है और उन्हें काफी आजादी मिली हुई है। "थारू महिलाएं फ़ैसले लेने और परिवार के मामलों को मैनेज करने में हावी रहती हैं" हालांकि वे पढ़ी-लिखी नहीं हैं। महान सभ्यताओं और संस्कृतियों की शुरुआत की स्टडी करते समय एक लेखक इस टॉपिक पर मौजूद सेकेंडरी लिटरेचर का सहारा ले सकता है। दुर्भाग्य से थारू ट्राइब्स के साथ ऐसा नहीं है; स्कॉलर्स को ट्राइब्स के मनमाने ज्ञान के सोर्स, खासकर ओरल ट्रेडिशन से जूझना पड़ता है, जिससे सोशियोलॉजिस्ट और सोशल एंथ्रोपोलॉजिस्ट के लिए कम्युनिटी की स्टडी करना मुश्किल हो जाता है। "थारू" शब्द की शुरुआत के बारे में बार-बार होने वाली बहस राजस्थान में "थार डेजर्ट" से जुड़ी है। कई जानकारों ने बिना किसी पक्के सबूत के यह तर्क दिया है कि थारू लोग 13वीं से 15वीं सदी में थार रेगिस्तान से देश के दूसरे इलाकों में चले गए थे। एक लोक कथा के अनुसार, बहुत पुराने समय में जब राजा किसी हमलावर की सेना से हार जाता था, तो शाही महल की औरतें दुश्मनों के हाथों में पड़ने के बजाय महल के सैस और चमार (कमजोर जाति) लोगों के साथ जंगलों में भाग जाती थीं। इस बात को और भी बल मिलता है क्योंकि यह देखा गया है कि थारू लोगों में औरतें ज्यादा हैं। थारू समुदाय में औरतों का दबदबा इस परंपरा से समझाया जाता है कि थारू लोग राजपूत औरतों और उनके नौकरों, सैस और चमारों के बीच मिली-जुली शादियों की संतानें हैं। डब्ल्यू. क्रूक (1896) का मानना है कि थारूओं की उत्पत्ति का पता 'थारू' शब्द से लगाया जा सकता है जिसका अर्थ है 'शराब पीने वाला'। ऐसा माना जाता है कि यह नाम मैदानी इलाकों के एक क्षत्रिय राजा ने थारूओं को शराब पीने की उनकी ललक और क्षमता को देखकर दिया था।

डी.एन. मजूमदार (1944) ने बताया कि थारूओं का मंगोलॉयड नस्लीय संबंध है और वे ब्लड ग्रुप टेस्ट या सेरोलॉजी के आधार पर राजपूतों से अपनी उत्पत्ति का दावा नहीं कर सकते। उनमें ऐसी कोई ज्ञात विशिष्ट विशेषताएँ नहीं हैं जो उन्हें राजस्थान के राजपूतों से उनकी सांस्कृतिक या नस्लीय प्रथाओं में जोड़ती हों। श्रीवास्तव (1965) थारूओं के बारे में बात करते हैं कि उनकी शारीरिक बनावट मंगोलॉयड है, जो गैर-मंगोलॉयड नस्ल के साथ भी सफलतापूर्वक मिल गई है। सामाजिक परिवर्तन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके द्वारा किसी भी समाज की मौजूदा व्यवस्था, चाहे वह भौतिक सभ्यता हो, और आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक हो, एक दूसरे सांस्कृतिक समाज में बदल जाती है। मैलिनोव्स्की के अनुसार, "सांस्कृतिक परिवर्तन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज की मौजूदा व्यवस्था, यानी उसकी सामाजिक, आध्यात्मिक और भौतिक सभ्यता एक प्रकार से दूसरे

प्रकार में बदल जाती है"। नेसफील्ड, वी.के. कोचर, डी.एन. मजूमदार, टी. एन. मदन, आर. पी. श्रीवास्तव, समीरा मैती, आर.सी. वर्मा, नदीम हसनैन, नरेंद्र एस. बिष्ट और टी. एस. बनकोटी, मैरी एन मैस्लाक, अमीर हसन, सी.टी. हू, एस.के. श्रीवास्तव। बी.एस. बिष्ट, जगदेव सिंह और कई अन्य लोगों ने थारू समुदाय में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन के अध्ययन में योगदान दिया है। इन विद्वानों ने परिवर्तन के पीछे के कारणों पर भी चर्चा की है; मुख्य कारण गैर-आदिवासी समुदायों के साथ संपर्क, विकास योजनाएं और शिक्षा है। उपरोक्त कारकों के कारण होने वाले परिवर्तनों को थारू समुदायों द्वारा अपना आधुनिकीकरण, संस्कृतिकरण और हिंदूकरण जैसी प्रक्रियाओं से अलग है।

थारू, भारत के सीमावर्ती तराई क्षेत्र में पायी जाने वाली एक जनजाति है। ऐसा माना जाता है कि 'थारू' शब्द की उत्पत्ति 'स्थविर' (Sthavir) से हुई है जिसका अर्थ होता है बौद्ध धर्म की थेरोवाद शाखा/परंपरा को मानने वाले अन्य स्वदेशी समुदायों की तरह, थारू समुदाय की भी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। थारू सांस्कृतिक रूप से विविध जातीय समूह हैं जो भारत के तराई में निवास करते हैं, जिनकी संस्कृति पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ने पर 'जनजाति' से अधिक 'जाति' जैसी होती जाती है। भारत सरकार ने बिहार के थारू समुदाय को जनजाति का दर्जा देने के लिए 08 जनवरी, 2003 को अधिसूचना जारी की थी। तभी से अपने दशकों लंबे संघर्ष की सफलता के उपलक्ष्य में थारू समुदाय के लोग प्रतिवर्ष 8 जनवरी को थारू दिवस के रूप में मनाते रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल ही में थारू जनजातियों की अनूठी संस्कृति को दुनिया भर में ले जाने के लिए एक योजना शुरू की है। इस योजना का उद्देश्य इन आदिवासी गांवों को पर्यटन मानचित्र पर लाना है। उत्तर प्रदेश सरकार भारत-नेपाल की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर स्थित थारू आदिवासियों के गांवों को जोड़ने की योजना बना रही है। यह एक होमस्टे योजना है जिसके तहत उत्तर प्रदेश वन विभाग पर्यटकों को थारू आदिवासियों के प्राकृतिक आवास में रहने का अनुभव प्रदान करेगा। उत्तर प्रदेश वन विभाग आदिवासियों को पर्यटकों से संवाद करने के लिए प्रशिक्षित करेगा। वे आदिवासियों को स्वच्छता और सुरक्षा के पहलुओं से परिचित कराने के लिए भी प्रोत्साहित करेंगे। थारू समुदाय के लोग एक ही भाषा साझा नहीं करते हैं। कई लोग विभिन्न स्थानिक थारू भाषा बोलते हैं। पश्चिमी नेपाल और भारत के आस-पास के हिस्सों में, थारू हिंदी, उर्दू और अवधी बोलते हैं। मध्य नेपाल में और उसके आस-पास, वे भोजपुरी का एक रूप बोलते हैं। पूर्वी नेपाल में, वे मैथिली का एक रूप बोलते हैं। थारू लोगों में कई समूह शामिल हैं जो अलग-अलग बोलियाँ बोलते हैं और पारंपरिक पोशाक, रीति-रिवाज, अनुष्ठान और सामाजिक संगठन में भिन्न हैं। वे सैकड़ों वर्षों से जंगलों में रहते आए हैं और अल्पकालिक परती खेती करते हैं। वे चावल, गेहूं, सरसों, मक्का और दालें उगाते हैं, जंगली फल, सब्जियां, औषधीय पौधे और अपने घर बनाने के लिए सामग्री जैसे वन उत्पाद भी इकट्ठा करते हैं।

अंतर्दृष्टि

थारू लोगों की आध्यात्मिक मान्यताएँ और नैतिक मूल्य प्राकृतिक पर्यावरण से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। उनके देवताओं के पंथ में बड़ी संख्या में देवता शामिल हैं जो जंगल में रहते हैं। जंगल में प्रवेश करने से पहले उनसे सहायता माँगी जाती है। थारू कई शताब्दियों से हिंदू धर्म से प्रभावित रहे हैं। थारूओं की खाद्य संस्कृति समृद्ध और विविध है। उनके भोजन उनके निवास क्षेत्र के आधार पर भिन्न होते हैं। घोंघी एक ताजे पानी का घोंघा व्यंजन है जिसे घोंघे को उसके खोल से चूसकर खाया जाता है। इसे चावल के साथ परोसा जाता है और तराई के स्वदेशी लोगों के लिए यह संयोजन सदियों से मुख्य भोजन रहा है। ढिकरी एक लोकप्रिय पश्चिमी थारू व्यंजन है जिसे गर्म पानी और चावल के आटे के साथ आटा गूंधकर तैयार किया जाता है और तीखी चटनी के साथ खाया जाता है। बगिया ढिकरी के समान है लेकिन पूर्वी थारूओं में लोकप्रिय है और इसमें चावल के आटे की बाहरी परत और चाकू, सब्जियाँ और अन्य तली हुई चीजों जैसे मीठे पदार्थों की आंतरिक सामग्री होती है। एक भुलक्कड़ चावल का केक है जो पूर्वी नेपाल के थारूओं बीच लोकप्रिय केक को तोड़कर मूली, मिर्च, लहसुन और अन्य मसालों के साथ उबले हुए चावल के साथ पकाया जाता है। थारू व्यंजनों के एक अन्य संक्षिप्त संग्रह में भुना हुआ केकड़ा, सरसों के तेल में तली हुई गेहूँ की रोटी और तले हुए तारो के पत्ते के केक शामिल हैं। घर में बनी शराब पीना और पेश करना जिसे जार, रक्सी या छांग के नाम से भी जाना जाता है, थारूओं की मुख्य संस्कृति में से एक है।

झुमरा, सखिया एवं छड़ी थारूओं का एक पारंपरिक नृत्य है, जो कि समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। सखिया नृत्य थारू समुदाय का एक पारंपरिक नृत्य है जो दशई और तिहार त्योहारों के दौरान अविवाहित युवा लड़कियों और लड़कों द्वारा किया जाता है। लाठी नाच, जिसे थारू छड़ी नृत्य के रूप में भी जाना जाता है, एक सांस्कृतिक नृत्य है जो मुख्य रूप से दशई त्यौहार के दौरान किया जाता है। थारू जनजाति नृत्य भारत के सीमावर्ती तराई क्षेत्रों में एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण का कारण बन गया है।

संदर्भ सूची :

1. सोमलता वर्मा, “शिक्षा और महिलाओं की बदलती स्थिति: उत्तरांचल की थारू जनजाति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन” (अप्रकाशित दस्तावेज़), समाजशास्त्र विभाग, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, 2005, मेरठ, पृष्ठ 80. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/Bitstream/10603/114271/16/16_synopsis.pdf.
2. संविधान (अनुसूचित जनजातियाँ) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967, pdf.
3. एस.के. श्रीवास्तव, द थारू: संस्कृति गतिशीलता का एक अध्ययन, 1958, आगरा, आगरा विश्वविद्यालय प्रेस, पृष्ठ 3.

4. एस.सी. वर्मा, “पर्यावरण के अनुकूल थारू जनजाति: सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता में एक अध्ययन”, 2010,
5. जर्नल ऑफ एशिया पैसिफिक स्टडीज़ (2010) खंड 1, संख्या 2, 177-187.
6. 2001, जनगणना, भारत सरकार।
7. समीरा मैती, द थारू: उनकी कला और शिल्प, 2004, नई दिल्ली, नॉर्दर्न बुक सेंटर, पृष्ठ 52.
8. प्रसन्ना के. सामल और अन्य, वनरावत: संकट में एक जनजाति, 2000, नैनीताल, ज्ञानोदय प्रकाशन नैनीताल, पृष्ठ 11.
9. थारूओं की असली कहानी (2009) वॉयस ऑफ थारूस, (2.1.2017 को एक्सेस किया गया)
<http://tharuculture.blogspot.in/2009/07/real-story-of-tharus.html>
10. आलोचना साहू, “परंपरावाद और वैश्वीकरण: जनजातीय परिवर्तन पर एक विमर्श”, ओडिशा रिव्यू, अप्रैल-मई 2014. पृष्ठ 31.
11. डी.एन. मजूमदार, आदिम जनजातियों का भाग्य, 1944, लखनऊ, द यूनिवर्सल पब्लिशर्स लिमिटेड, पृष्ठ 68.
12. डब्ल्यू. क्रूक, द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ़ द नॉर्थ-वेस्टर्न प्रोविंसेस एंड अवध, 1896, कलकत्ता, ऑफिस ऑफ़ द सुपरिटेण्डेंट ऑफ़ गवर्नमेंट प्रिंटिंग, इंडिया, वॉल्यूम, 1, पृ.381.
13. समीरा मैती, द थारू: देयर आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, ओप.सिट., पृ.29
14. डी.एन. मजूमदार, “थारूज़ एंड देयर ब्लड ग्रुप्स”, जर्नल ऑफ़ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल, वॉल्यूम VIII, नंबर 1, पृ. 1-12.
15. आर.पी. श्रीवास्तव, “ब्लड ग्रुप्स इन द थारूज़ ऑफ़ उत्तर प्रदेश एंड देयर बेयरिंग ऑन एथनिक एंड जेनेटिक रिलेशनशिप्स”, 1965, <http://www.jstor.org/stable/41448701>.
16. आलोचना साहू, “ट्रेडिशनलिज़्म एंड ग्लोबलाइज़ेशन: ए डिस्कोर्स ऑन ट्राइबल ट्रांसफॉर्मेशन”, ओप.सिट., पृ.92,
17. नरेन्द्र एस. बिष्ट, और एट अल.(एड्स.), एनसाइक्लोपीडिक एथनोग्राफी ऑफ़ द हिमालयन ट्राइब्स: ए-डी, 2004, दिल्ली, ग्लोबल विज्ञान पब्लिशिंग हाउस, पृ.1609.
18. पूनम राणा, एनिमिस्टिक प्रैक्टिसेस अमंग थारूज़ ऑफ़ डांग एंड देवखुरी,
himalaya.socanth.cam.ac.uk/collections/journals/.../pdf/ancient_nepal_143_02.pdf
पृ.9.